

प्रिय श्री राजा,

इतने दिनों की चुप्पी के लिए क्षमा चाहता हूँ -- कुछ ऐसी व्यस्तता रही है कि हतमीनान से लिखने का मौका ही नहीं मिल सका और निरी रस्मी चिट्ठी आपको लिखने का मन नहीं होता । इतना मरोसा रहा है कि आप अन्याय न लेंगे।

'पूर्वग्रह' के अंक में दो-तीन भयंकर भूलें हुई हैं जिनके लिए भी आपसे माफ़ी चाहता हूँ । मोपाल से बाहर कपने और आखिरी वक्त हर चीज़ खुद न देख पाने की मजबूरी में यह हुआ । पर कारण जो भी हों मैं इन भूलों को अक्षम्य मानता हूँ । यह और बात है कि इस अंक की बहुत चर्चा है : दिल्ली की एक दुकान ने, जो खुले स्टाल पर पूर्वग्रह की प्रतियां बेचती है, पचीस प्रतियां बेच डालीं और बनी हुई मांग को देखते हुए पंद्रह अतिरिक्त प्रतियां तार भेजकर मंगायीं । दिनमान, नई दुनिया आदि कई अखबारों में रिथ्यू निकले हैं और सभी में तारीफ़ हुई है । इसलिए इन भूलों के बावजूद (जिन्हें हम-आप ही जानते हैं) मुझे कुछ संतोष है कि आपके कृतित्व और व्यक्तित्व पर एक समग्र और पूर्ण अंक निकल सका है । साहित्य-जगत् में आपके जनत्स का बड़ा प्रभाव पड़ा है, सासकर इस बात का कि आपने एकाधिक कवियों की पंक्तियां इतने उत्साह से यादकर उद्धृत की हैं । कविता के प्रति सम्बेदनशील चित्रकारों की संख्या भारत में कम ही है और इसलिए आप सहज और अनायास ही एक नया आकर्षण कवियों के लिए बन गये हैं । एक युवा लेखक-प्रकाशक ने तो मुझसे यह पूछताह की कि अगर इस तरह के जनत्स पर्याप्त हों तो वह उन्हें पुस्तकाकार निकालना चाहेगा । मोनोग्राफ़ के बारे में आपकी प्रतिक्रिया बिल्कुल ठीक है : उसकी सर्वत्र मुक्त कण्ठ से प्रशंसा हो रही है । एक

दिलचस्प बात यह है कि मद्र के लगभग १५०० स्कूलों में पुस्तकालयों के लिए उसकी प्रतियां खरीदी गयी हैं और वे युवा छात्रों तक पहुंचेंगी । इसमें तो कोई सन्देह नहीं है कि हिन्दी में इस स्तर का लगभग निदोष और क्लासम्पन्न मोनोग्राफ दूसरा नहीं है । थोड़ा वक्त ज्यादा लगा पर काम अच्छा हो गया यह सन्तोष की बात है । कुछे हलकों में इस मोनोग्राफ के अंग्रेजी में निकालने की मांग की गयी है : मुझे यह अच्छा लगा कि हमने मौलिक रूप से हिन्दी में कुछ ऐसा किया जो अब अंग्रेजी में किया जाये यह लग रहा है ।

यह कहना अनावश्यक है कि अगर आपने अथक धैर्य और उत्साह के साथ सहयोग और मार्गनिर्देशन न किया होता तो ये दोनों प्रकाशन संभव न थे । उनकी सफलता का सच्चा श्रेय आपको ही है जैसी कि भूलों की जिम्मेदारी मेरी है । मैं बहुत कृतज्ञ अनुभव करता हूं । यों तो पूर्वग्रह का सम्पादन पिछले छः वर्षों से कर रहा हूं पर यह काम करने में सच्चा रक्तात्मक सुख और उत्तेजना मिली -- एक तरह का दुर्लभ काष्ठसुख ।

पिछले दिनों फ्रांस में हुई दो मातों पर यहां के बुद्धिजीवी क्षेत्रों में गहरी प्रतिक्रिया हुई है : रोलान् बास्त और सात्र । विशेषतः सात्र का लेखकों की एक समूची पीढ़ी पर गहरा प्रभाव रहा है । आज भी जब युवा सजग लोग कविता या कला को पर्याप्त कर्म न मानकर श्रद्धाहीन कर्म की ओर आकर्षित होते हैं यह बात सात्र की बहुत सार्थक लगता है जब उसने साहित्य को पूर्ण काम मानने की जिद की थी । दोनों पर हम पूर्वग्रह में कुछ सामग्री देने का यत्न कर रहे हैं । बास्त ने एक बहुत विचारोन्नेक बात यह कही कि हमारे समय में साहित्य को अपने ज्वर नहीं चमड़ी बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है ।

हधर हिन्दी में कविता का जैसे विस्फोट सा हुआ है । चार पीढ़ियों के बुजुर्ग और युवा कवियों के दस-पंद्रह संग्रह प्रकाशित हुए हैं । मैंने उनमें से एक चयन किया

और एक छोटी टिप्पणी भी लिखी : "अपने घर में शब्द" । उसकी एक प्रति आपको साथ ही भेज रहा हूँ । कविता में क्या हो रहा है इसका कुछ अन्दाज़ आपको होगा ।

आपके द्वारा दी गयी राशि से मद्र के युवा कलाकारों की प्रदर्शनी के लिए हमने ग्यारह कलाकार चुने हैं और वे काम पर जुट गये हैं । ^{पन्द्रह} ~~एक~~ तक उनसे कृतियां मांगी हैं । ^{नवंबर} ~~नवंबर~~ में प्रदर्शनी करने का इरादा है । परिषद् को पूरी हमारत मिल गयी है : पहले आधा हिस्सा एक पौली टेक्नीक के पास था । जल्दी ही उसमें एक पूरे कमरे में हम स्थायी रूप से मोपाल में आपकी सभी कलाकृतियों को स्थायी रूप से प्रदर्शित कर देंगे : सब कम फोर रज़ा !

परिषद् काम का इस बरस और विस्तार पाने की उम्मीद है । हम एक ग्राफिक प्रेस लगा रहे हैं, मद्र के दो और कलाकारों पर मोनोग्राफ़ कापेंगे, मद्र के पांच कलाकारों की कलाकृतियों के रिप्रोडक्शन कापेंगे । आधुनिक कला गैलरी काम आगे बढ़ेगा । हाल ही में हमने उस्ताद अलाउद्दीन खां की स्मृति में छः दिनों का एक संगीत-नृत्य समारोह "स्मरण" आयोजित किया जो बहुत सफल रहा । यह बिलक्षण बात है कि संगीत में, विशेषतः गायन में, ७० बरस के बुजुर्ग जैसे मल्लिकार्जुन मंसूर और उस्ताद निसार हुसेन खां अभी भी पूरी शक्ति और सार्थकता के साथ सजग-सक्रिय हैं । खजुराहो में मार्च में हमने शास्त्रीय नृत्य समारोह आयोजित किया जिसमें औरों के अलावा रश्मि ने कथक पेश किया -- मूर्ति और शिल्प पर केन्द्रित कथक । मूर्तिकला, स्थापत्य, नृत्य, संगीत और कविता को एक घनिष्ठ तात्कालिकता में यह समारोह बड़ी खूबसूरती से स्कन करता है ।

विनोद मारकाज आपसे पेरिस में मिलकर बहुत अभिभूत लौटते हैं । शायद रामकुमार जी भी साओ पाओलो और न्यूयार्क से लौटते हुए इधर पेरिस आये होंगे ।

तीन प्रमुख भारतीय लेखक निर्मल बर्मा, अनन्तमूर्ति और दिलीप चित्रे भी इधर पेरिस आनेवाले होंगे। आपसे मुलाकात होगी ही।

मृणाल पाण्डे तक आपकी प्रशंसा पहुँचा दी है। वे क्लट्टियाँ में लखनऊ गयी हैं। उनके नाम में 'पाण्डे' या पांडे दोनों ही ढंग से लिखा जा सकता है।

ओस्लो में आपकी प्रदर्शनी कैसी रही? निश्चय ही सफल और बहुवर्चस्व। उसका कैटलाग और पोस्टर हो सके तो ज़रूर भेजें। श्रीमती जानीन के चित्रों के कुछ और फोटो हमने पूर्णग्रह के अगले अंक में छापे हैं। मिलता होगा। सहयोग के लिए आभारी हूँ।

आपने जो सूची भेजी थी उन सभी व्यक्तियों को पूर्णग्रह या मोनोग्राफ या दोनों भेज दिये हैं। श्री अठावले, श्री वासुदेव आदि की पात्रती भी आ गयी।

मैं इधर सात-आठ महीनों से कृषि विभाग का विशेष सचिव हो गया हूँ। पर परिषद् काम मेरे ही जिम्मे है। इधर विधानसभा के चुनाव हो रहे हैं और जून के पहले सप्ताह में नयी सरकार आ जायेगी। उम्मीद है कि तब काम कुछ और बढ़ेगा। शायद संस्कृति का बाकायदा एक विभाग ही बन जाये।

जुलाई में पूर्णग्रह का एक विशेषांक हम इधर हुए काठ्यविस्फोट पर केन्द्रित कर रहे हैं। उसके लिए कविता पर, वह कैसे आपको उकसाती-लुभाती रही है कुछ शब्द लिख सकेंगे? बहुत अच्छा हो अगर आप यह कर सकें। जून के अन्त तक भी मिल जाये तो देर न होगी।

हम दोनों का आप दोनों को नमस्कार। लिख भले नहीं पाता पर आपकी याद बहुत उत्साह और आदर से हमारे घर में अक्सर होती रहती है।

शिवदास
१२-१२